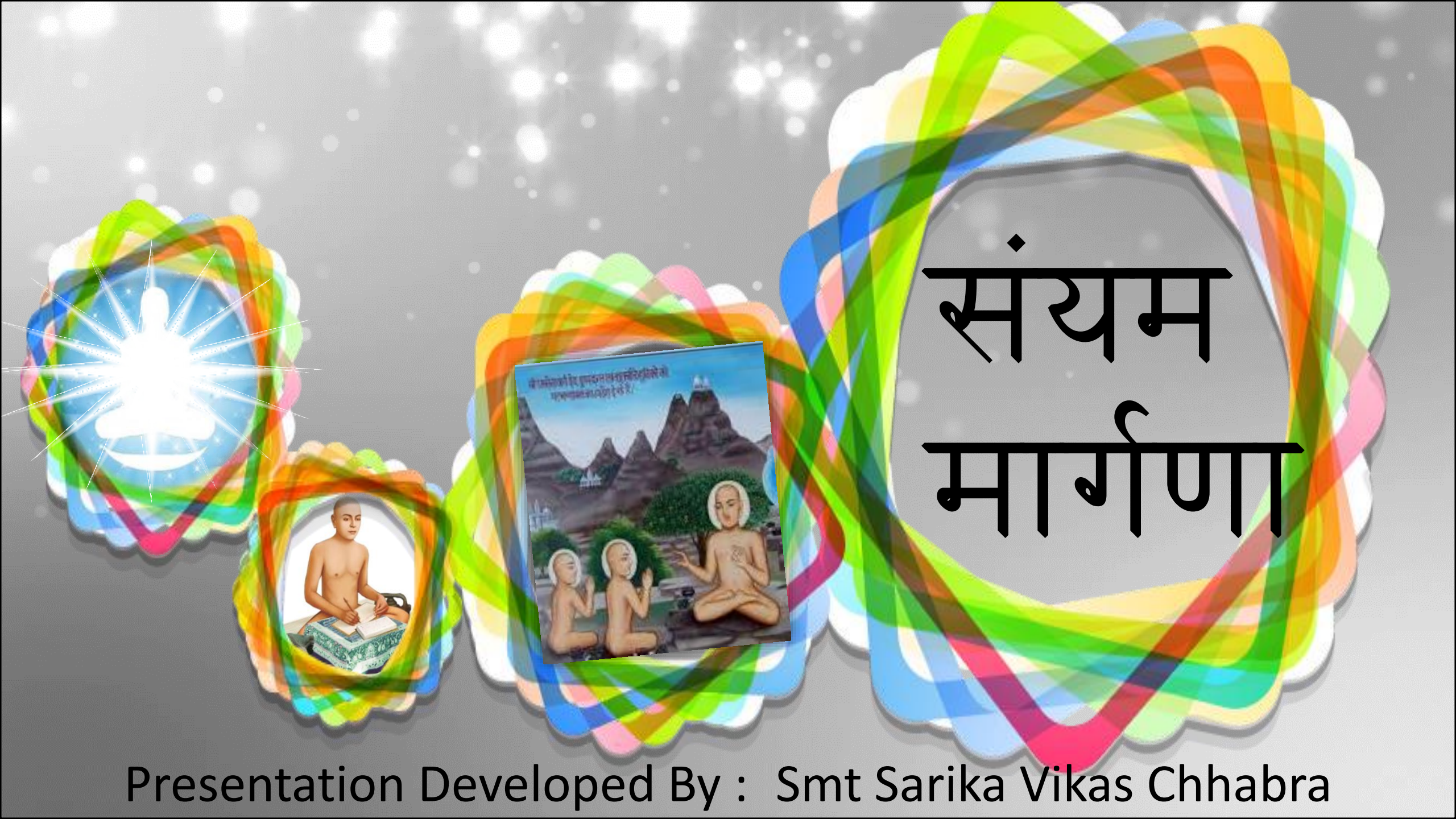

संयम मार्गणा

Presentation Developed By : Smt Sarika Vikas Chhabra

वदसमिदिकसायाणं, दंडाण तहिंदियाण पंचण्हं।
धारणपालणणिग्गह-चागजओ संजमो भणिओ॥465॥

➔अर्थ - अहिंसा, अचौर्य, सत्य, शील (ब्रह्मचर्य), अपरिग्रह इन पाँच महाव्रतों का धारण करना;

➔ईर्या, भाषा, एषणा, आदाननिक्षेपण, उत्सर्ग इन पाँच समितियों का पालना;

➔क्रोधादि चार प्रकार की कषायों का निग्रह करना;

➔मन, वचन, कायरूप दण्ड का त्याग; तथा

➔पाँच इन्द्रियों का जय - इसको संयम कहते हैं।

➔अतएव संयम के पाँच भेद हैं ॥465॥

संयम

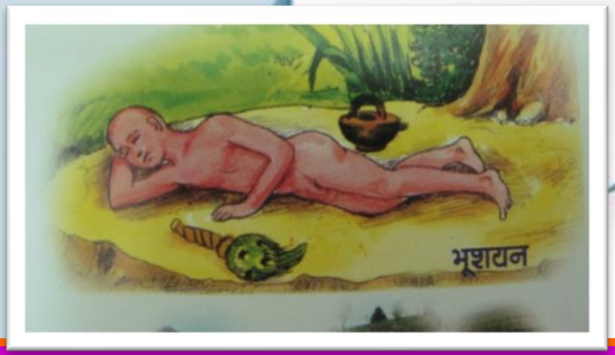

सं + यम = सम्यक् रूप से यम

व्रतों का धारण	समिति का पालन	कषायों का निग्रह	दण्डों का त्याग	इन्द्रियों का जीतना

संयम

5 व्रतों का धारण (हिंसादि 5 पापों का त्याग करना)

- 5 महाव्रत
  - अहिंसा
  - सत्य
  - अस्तेय
  - ब्रह्मचर्य
  - अपरिग्रह

संयम

5 समिति का पालन (यत्नपूर्वक प्रवृति करना)

समिति

- ईर्या
- भाषा
- एषणा
- आदान-निक्षेपण
- उत्सर्ग

संयम

4 कषायों का निग्रह करना

कषाय अर्थात् जो सम्यक्त्वादि गुणों का घात करे

4 कषायें – क्रोध, मान, माया, लोभ

संयम

3 दण्डों का
त्याग करना

दण्ड = योग प्रवृत्ति

मन, वचन, काय

संयम

इन्द्रिय विजय - 5 इन्द्रियों को जीतना

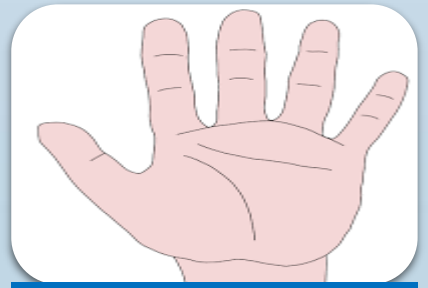

स्पर्शन

रसना

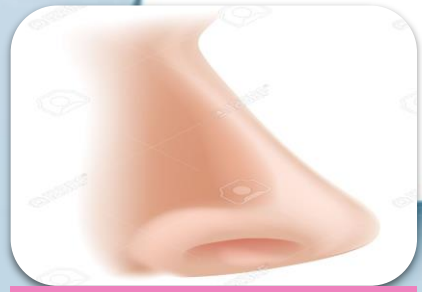

घ्राण

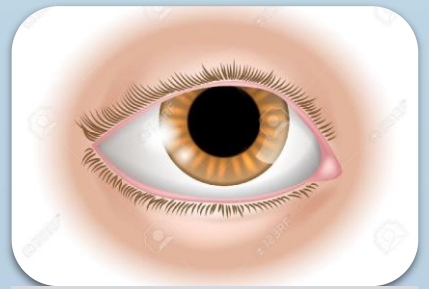

चक्षु

कर्ण

बादरसंजलणुदये, सुहुमुदये समखये य मोहस्स।
संजमभावो णियमा, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥466॥

➔अर्थ - बादर संज्वलन के उदय से अथवा

➔सूक्ष्मलोभ के उदय से अथवा

➔मोहनीय कर्म के उपशम से अथवा क्षय से

➔नियम से संयमरूप भाव उत्पन्न होते हैं – ऐसा जिनेन्द्रदेव ने कहा है ॥466॥

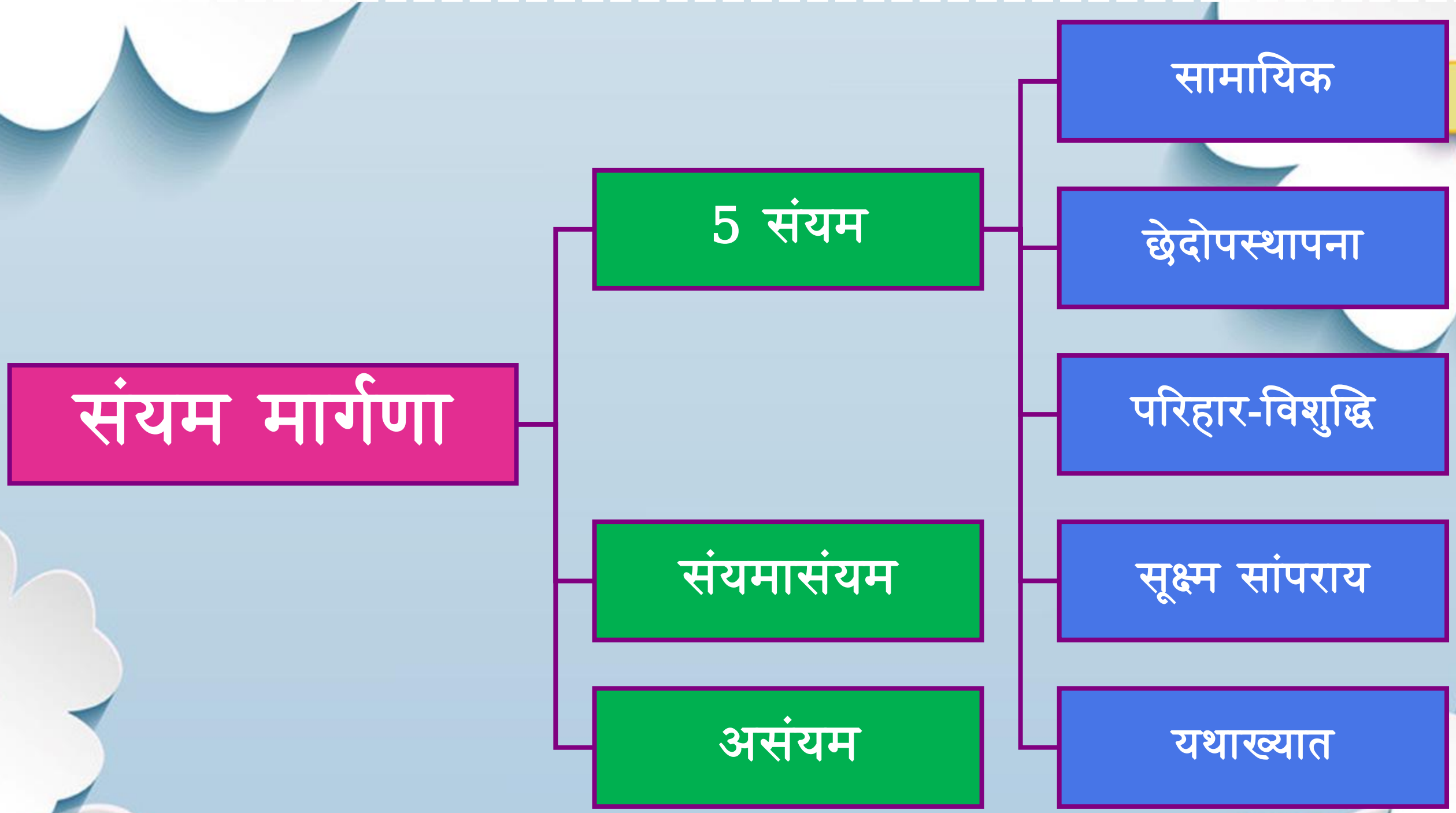

संयम मार्गणा

- 5 संयम
  - सामायिक
  - छेदोपस्थापना
  - परिहार-विशुद्धि
  - सूक्ष्म सांपराय
  - यथाख्यात
- संयमासंयम
- असंयम

संयम

1.सामायिक

2.छेदोपस्थापना

3.परिहार विशुद्धि

4.सूक्ष्म सांपराय

5.यथाख्यात चारित्र

संयम के निमित्त कारण

क्र.	निमित्त	गुणस्थान
1	बादर संज्वलन कर्म का उदय	6-9
2	सूक्ष्म लोभ कर्म का उदय	10
3	मोहनीय कर्म का उपशम	11
4	मोहनीय कर्म का क्षय	12-14

बादरसंजलणुदये, बादरसंजमतियं खु परिहारो।
पमदिदरे सुहुमुदये, सुहुमो संजमगुणो होदि॥467॥

➔अर्थ - जो संयम के विरोधी नहीं हैं ऐसे बादर संज्वलन कषाय के देशघाति स्पर्धकों के उदय से सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि ये तीन संयम होते हैं।

➔इनमें से परिहारविशुद्धि संयम तो प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में ही होता है, किन्तु सामायिक और छेदोपस्थापना प्रमत्तादि अनिवृत्तिकरणपर्यन्त होते हैं।

➔सूक्ष्मकृष्टि को प्राप्त संज्वलन लोभ के उदय से सूक्ष्मसांपराय संयम होता है ॥467॥

4 कषाय

अनंतानुबंधी	अप्रत्याख्यानावरण	प्रत्याख्यानावरण	संज्वलन
तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व का घात हो	देशचारित्र का घात हो	सकलचारित्र का घात हो	यथाख्यातचारित्र का घात हो
अनंत संसार (मिथ्यात्व) के साथ संबंध कराये	किंचित् त्याग न होने दे	पूर्ण त्याग न होने दे	जो संयम के साथ प्रज्वलित रहे

प्रमत्त-अप्रमत्तविरत में क्षायोपशमिक चारित्र

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

सकल चारित्र

संज्वलन प्रकृति का

उदय

यथाख्यात चारित्र का घात

तीन कषाय चौकड़ी का संज्वलन में बदलना

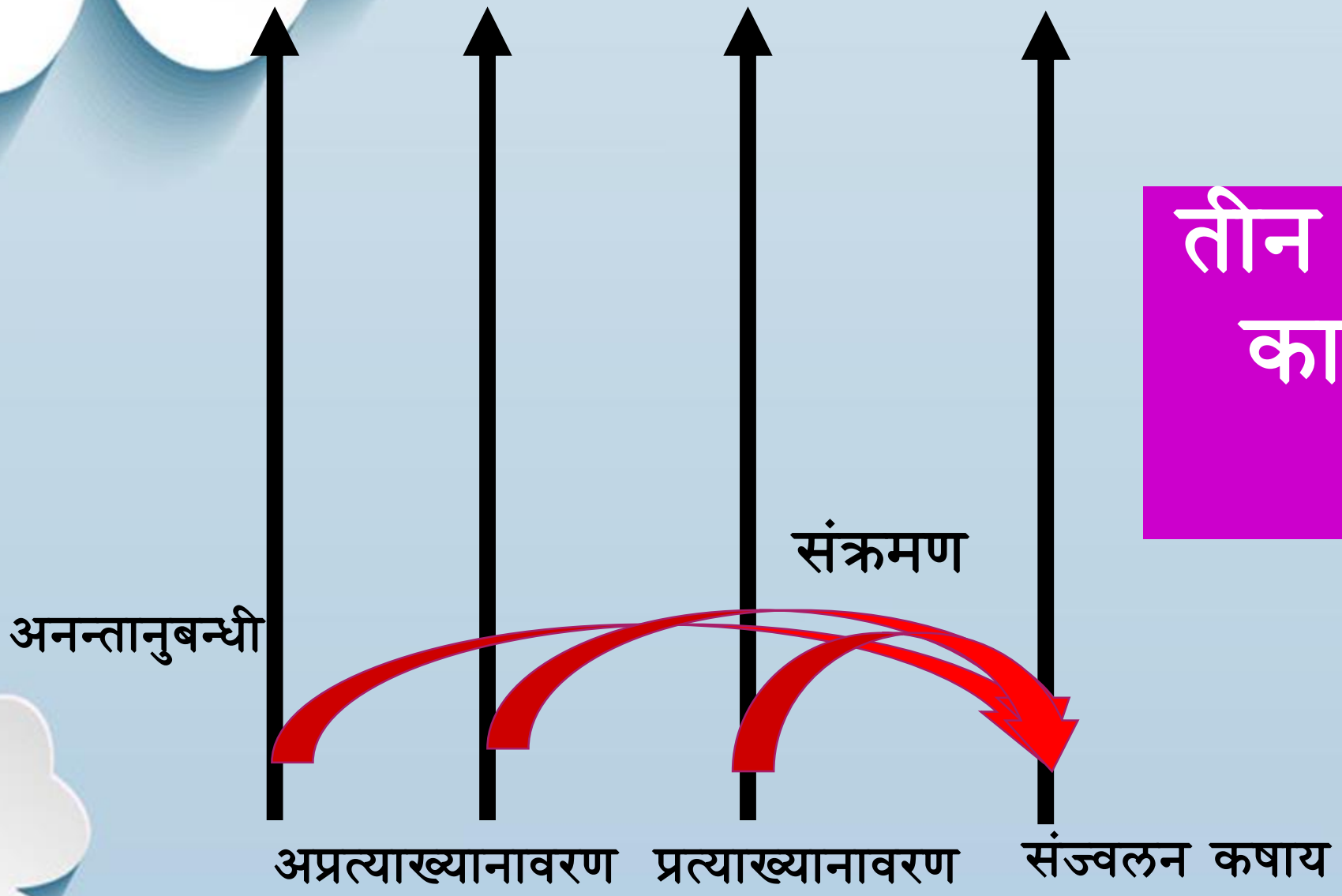

संयम के निमित्त

निमित्त	संयम	गुणस्थान
बादर संज्वलन कर्म का उदय	सामायिक	6 – 9
	छेदोपस्थापना	6 – 9
	परिहार विशुद्धि	6 – 7
सूक्ष्म लोभ कर्म का उदय	सूक्ष्म सांपराय	10

जहखादसंजमो पुण, उवसमदो होदि मोहणीयस्स।
खयदो वि य सो णियमा, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥468॥

➔अर्थ - यथाख्यात संयम नियम से मोहनीय कर्म के उपशम या क्षय से होता है – ऐसा जिनेन्द्रदेव ने कहा है ॥468॥

मोहनीय कर्म का उपशम	उपशम यथाख्यात	11वाँ गुणस्थान
मोहनीय कर्म का क्षय	क्षायिक यथाख्यात	12 से 14 गुणस्थान

उपशान्तकषाय गुणस्थान

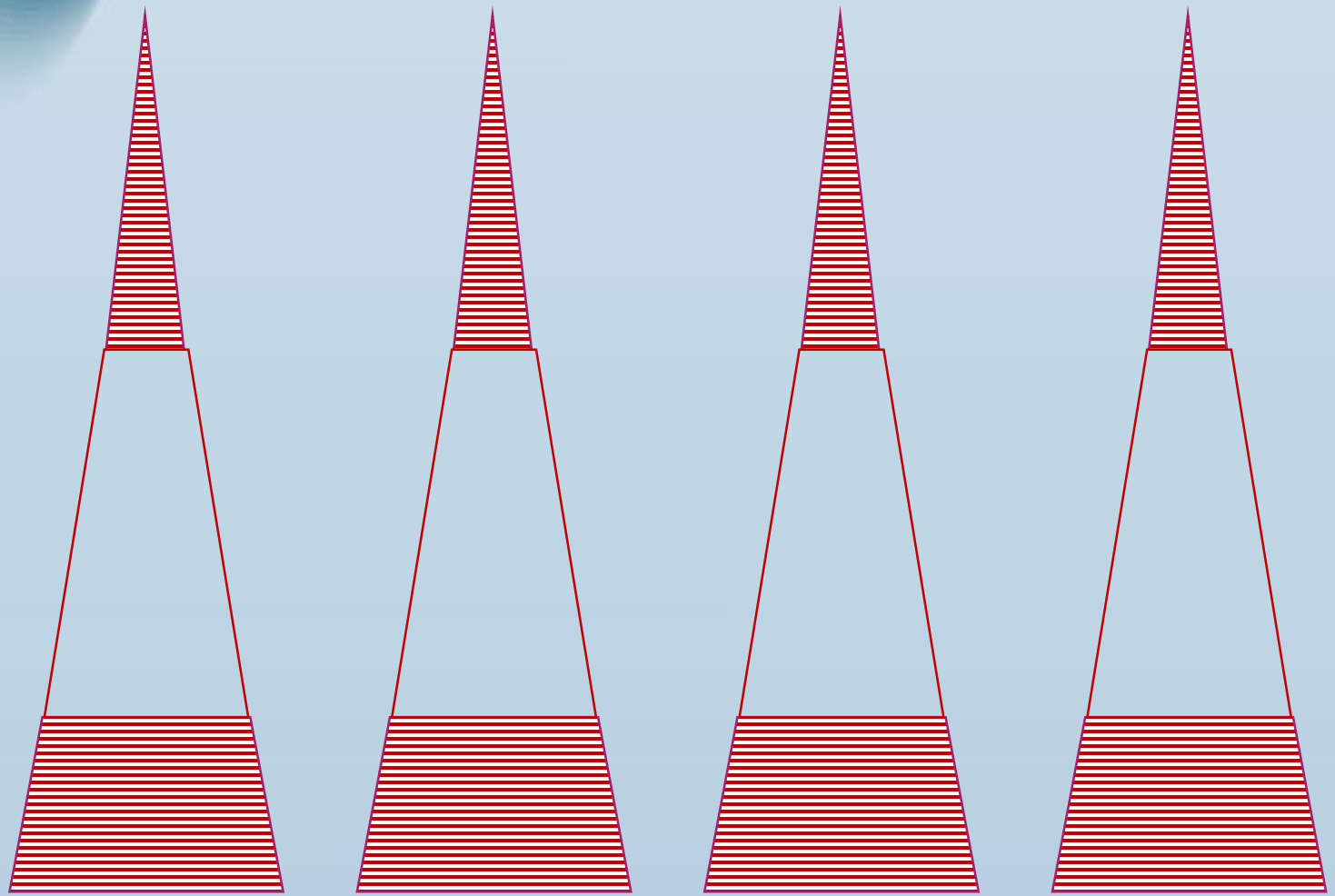

उपशांतमोह गुणस्थान

अप्रत्याख्यानावरण 4 | प्रत्याख्यानावरण 4 | संज्वलन 4 | नोकषाय 9

कुल 21 प्रकृतियों का उपशम

तदियकसायुदयेण य, विरदाविरदो गुणो हवे जुगवं।
विदियकसायुदयेण य, असंजमो होदि णियमेण॥469॥

➔अर्थ - तीसरी प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से विरताविरत (देशविरत, मिश्रविरत, संयमासंयम) नाम का पाँचवाँ गुणस्थान होता है और

➔दूसरी अप्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से असंयम (संयम का अभाव) होता है ॥469॥

प्रत्याख्यानावरण का उदय	देशसंयम	5वाँ गुणस्थान
अप्रत्याख्यानावरण का उदय	असंयम	3-4 गुणस्थान
अनंतानुबंधी का उदय	असंयम	1-2 गुणस्थान

विशेष

जिसके अनन्तानुबन्धी सम्बन्धी किसी एक कषाय का उदय है उसके प्रत्याख्यानावरण, अप्रत्याख्यानावरण और संज्वलन सम्बन्धी उसी कषाय का उदय साथ में होगा ही |

जिसके अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी किसी एक कषाय का उदय है उसके प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन सम्बन्धी उसी कषाय का उदय होगा ही |

जिसके प्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी किसी एक कषाय का उदय है उसके संज्वलन सम्बन्धी उसी कषाय का उदय होगा ही |

संगहिय सयलसंजम-मेयजममणुत्तरं दुरवगम्मं।
जीवो समुव्वहंतो, सामाइयसंजमो होदि॥470॥

➔अर्थ - उक्त व्रतधारण आदिक पाँच प्रकार के संयम में संग्रह नय की अपेक्षा से एकयम-भेदरहित होकर अर्थात् अभेद रूप से "मैं सर्व सावद्य का त्यागी हूँ" इस तरह से जो सम्पूर्ण सावद्य का त्याग करना इसको सामायिक संयम कहते हैं।

➔यह संयम अनुपम है तथा दुर्लभ है और दुर्धर्ष है।

➔इसके पालन करनेवाले को सामायिक संयमी कहते हैं ॥470॥

सामायिक संयम

व्रत धारण आदि 5 प्रकार के संयम को संग्रह करके

सर्व सावद्य के त्यागरूप अभेद संयम सामायिक संयम कहलाता है ।

ऐसा संयम है —

- अनुत्तर
- दुःखगम्य
- इसके समान दूसरा नहीं
- दुर्लभपने से प्राप्त होता है ।

छेत्तूण य परियायं, पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं।
पंचजमे धम्मे सो, छेदोवट्ठावगो जीवो॥471॥

➔अर्थ - प्रमाद के निमित्त से सामायिकादि से च्युत होकर जो सावद्य क्रिया के करनेरूप सावद्य पर्याय होती है उसका प्रायश्चित्त विधि के अनुसार छेदन करके जो जीव अपनी आत्मा को व्रत धारणादिक पाँच प्रकार के संयमरूप धर्म में स्थापन करता है उसको छेदोपस्थापनसंयमी कहते हैं ॥471॥

छेदोपस्थापना संयम

छेदेन उपस्थापनं = छेद के द्वारा उपस्थापन करना

छेद	उपस्थापन
सावद्य पर्याय को प्रायश्चित्त विधि से दूर करना	अपनी आत्मा को 5 प्रकार संयम में स्थित करना

प्रायश्चित्त के द्वारा अपनी आत्मा को धर्म में स्थापित करना छेदोपस्थापना है ।

छेदोपस्थापना संयम

भेदरूप से 5 प्रकार के संयम में स्वयं को स्थापित करना ।

छेद	उपस्थापन
भेदरूप संयम अर्थात् ५ प्रकार के व्रत, समिति आदि में	अपने को स्थापित करना ।

एक ही संयम को द्रव्यार्थिक नय से सामायिक संयम कहते हैं एवं

पर्यायार्थिक नय से छेदोपस्थापना संयम कहते हैं ।

पंचसमिदो तिगुत्तो, परिहरइ सदा वि जो हु सावज्ज।
पंचेक्कजमो पुरिसो, परिहारयसंजदो सो हु॥472॥

➔अर्थ - जो पाँच समिति और तीन गुप्तियों से युक्त होकर सदा ही हिंसा रूप सावद्य का परिहार करता है, वह सामायिक आदि पाँच संयमों में से परिहारविशुद्धि नामक संयम को धारण करने से परिहारविशुद्धि संयमी होता है ॥472॥

परिहार-विशुद्धि संयम

जो जीव 5 समिति, 3 गुप्ति से संयुक्त होकर

सदाकाल हिंसारूप सावद्य को त्याग करता है

वह परिहार-विशुद्धि संयमी है ।

परिहार-विशुद्धि संयम

परिहार

प्राणियों की हिंसा का त्याग

विशुद्धि

विशेष शुद्धता

तीसं वासो जम्मे, वासपुधत्तं खु तित्थयरमूले।
पच्चक्खाणं पढिदो, संझूणदुगाउयविहारो॥473॥

➔अर्थ - जन्म से लेकर तीस वर्ष तक सदा सुखी रहकर,

➔फिर दीक्षा ग्रहण करके

➔श्रीतीर्थंकर भगवान के पादमूल में

➔आठ वर्ष तक प्रत्याख्यान नामक नौवें पूर्व का अध्ययन करने वाले जीव के यह संयम होता है।

➔इस संयमवाला जीव तीन संध्याकालों को छोड़कर प्रतिदिन दो कोस पर्यन्त गमन करता है, रात्रि को गमन नहीं करता और इसके वर्षाकाल में गमन करने का या न करने का कोई नियम नहीं है ॥473॥

परिहारविशुद्धि चारित्र किसके होता है?

जन्म से 30 वर्ष तक भोजन-पानादि से सुखी रहने के बाद

जिनदीक्षा अंगीकार कर

पृथक्त्व (8) वर्ष तीर्थंकर के पादमूल में रहकर

नवमें प्रत्याख्यान नामक पूर्व का अध्ययन करने वाला

परिहारविशुद्धि चारित्र के धारक जीव

नियम से 2 कोस प्रतिदिन विहार करते हैं ।

3 संध्याकाल एवं रात्रि में विहार नहीं करते हैं ।

वर्षाकाल में विहार का निषेध नहीं है ।

कालः जघन्य — अन्तर्मुहूर्त; उत्कृष्ट — 38 वर्ष कम एक कोटि पूर्व ।

अणुलोहं वेदंतो, जीवो उवसामगो व खवगो वा।
सो सुहुमसांपराओ, जहखादेणूणओ किंचि॥474॥

➔अर्थ - जिस उपशमश्रेणी वाले अथवा क्षपकश्रेणी वाले जीव के अणुमात्र लोभ-सूक्ष्मकृष्टि को प्राप्त लोभकषाय के उदय का अनुभव होता है उसको सूक्ष्मसांपरायसंयमी कहते हैं। इसके परिणाम यथाख्यात चारित्रवाले जीव के परिणामों से कुछ ही कम होते हैं ॥474॥

सूक्ष्म सांपराय संयम

सूक्ष्म संज्वलन लोभ के उदय को भोगने वाला

उपशमक या क्षपक जीव

सूक्ष्म सांपराय संयमी है ।

यह संयम यथाख्यात से कुछ ही कम है ।

संयम की वृद्धि

सामायिक, छेदोपस्थापना संयम

इससे अधिक

सूक्ष्म सांपराय संयम

इससे अधिक

यथाख्यात संयम

संयम भावों की तुलना

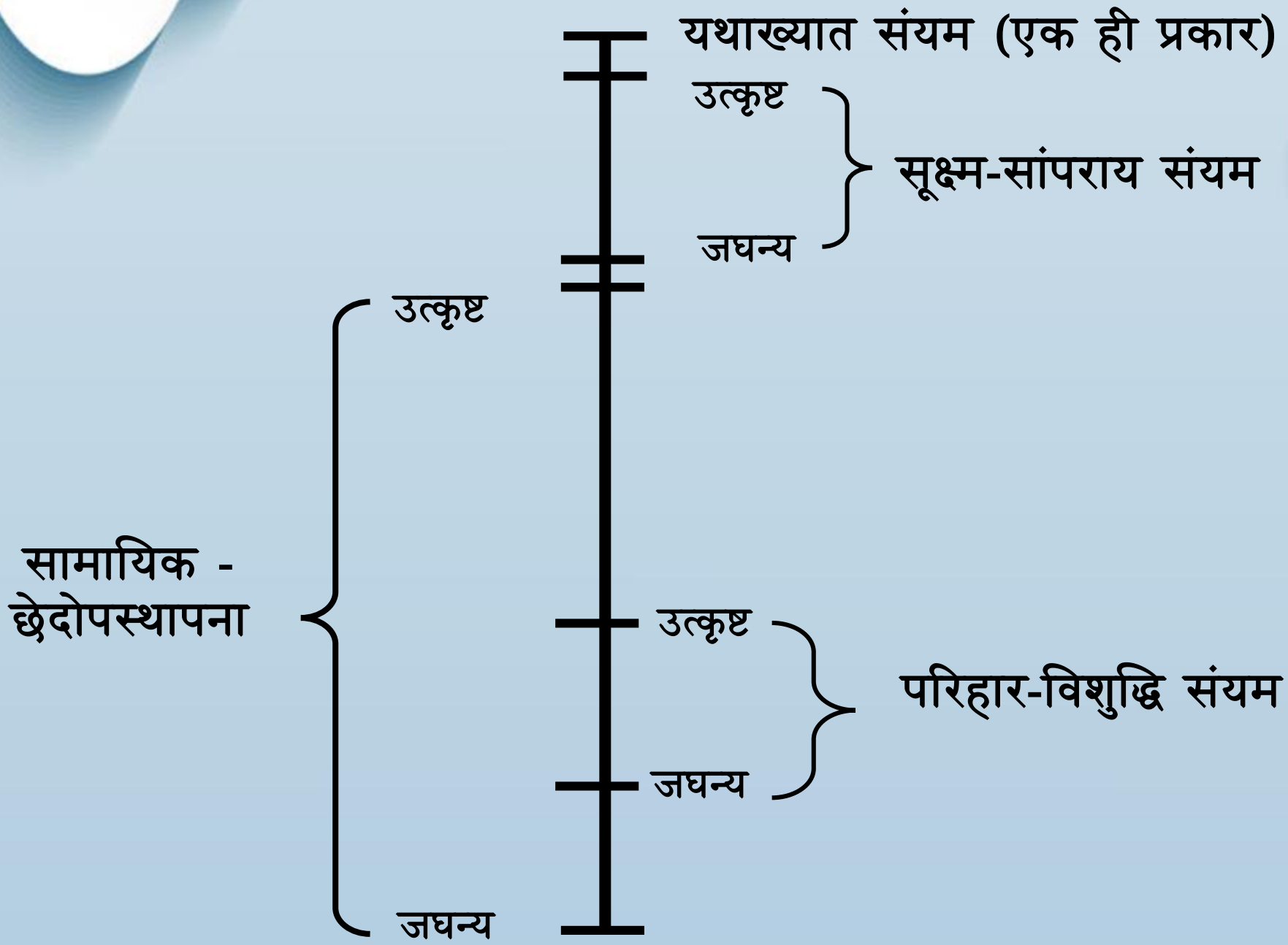
यथाख्यात संयम (एक ही प्रकार)
उत्कृष्ट
सूक्ष्म-सांपराय संयम
जघन्य
सामायिक - छेदोपस्थापना
उत्कृष्ट
उत्कृष्ट
परिहार-विशुद्धि संयम
जघन्य
जघन्य

उवसंते खीणे वा, असुहे कम्मम्मि मोहणीयम्मि।
छदुमट्ठो व जिणो वा, जहखादो संजदो सो दु॥475॥

➔अर्थ - अशुभ मोहनीय कर्म के उपशान्त या क्षय हो जाने पर उपशान्तकषाय और क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती छद्मस्थ अथवा सयोगी और अयोगी जिन यथाख्यात संयमी होते हैं ॥475॥

यथाख्यात संयम

समस्त मोहनीय कर्म के सर्वथा उपशम या क्षय से

उत्पन्न यथावस्थित आत्म-स्वभाव की अवस्था

यथाख्यात संयम है ।

यथाख्यात संयम के स्वामी

- छद्मस्थ
  - उपशांत मोही
  - क्षीण मोही
- सर्वज्ञ
  - सयोग केवली
  - अयोग केवली
  - सिद्ध

पंचतिहिचहुविहेहिं य, अणुगुणसिक्खावयेहिं संजुत्ता।
उच्चंति देसविरया, सम्माइट्ठी झलियकम्मा॥476॥

➔अर्थ – जो पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत - ऐसे बारह व्रतों से संयुक्त

➔सम्यग्दृष्टि, कर्मनिर्जरा के धारक हैं

➔वे देशविरती संयमासंयम के धारक हैं – ऐसा परमागम में कहा है ॥476॥

संयमासंयमी

जो सम्यग्दृष्टि 5 अणुव्रतों, 3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत सहित हैं, वे देशविरत (संयमासंयमी) कहलाते हैं ।

जो अनंतानुबंधी एवं अप्रत्याख्यानावरण कषाय के क्षयोपशम सहित हैं, वे देशविरत हैं ।

देशविरत के निरन्तर कर्म निर्जरा होती है ।

संयमासंयम

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान का

प्रत्याख्यान सर्वघाती , संज्वलन देशघाती प्रकृति का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

उदय

वीतरागता

सकल चारित्र का घात

दंसणवयसामाइय, पोसहसच्चित्तरायभत्ते य।
बम्हारंभपरिग्गह, अणुमणमुद्दिट्ठदेसविरदेदे॥477॥

➔अर्थ - दार्शनिक, व्रतिक, सामायिकी, प्रोषधोपवासी, सचित्तविरत, रात्रिभुक्तिविरत, ब्रह्मचारी, आरंभविरत, परिग्रहविरत, अनुमतिविरत, उद्दिष्टविरत ये देशविरत (पाँचवें गुणस्थान) के ग्यारह भेद हैं ॥477॥

देशविरति के 11 भेद (11 प्रतिमा)

दार्शनिक	• 5 उदम्बर फल और सप्त व्यसन का त्याग एवं शुद्ध सम्यक्त्वी
व्रतिक	• 5 अणुव्रतों का निरतिचार पालन
सामायिक	• नियम से 3 बार सामायिक करना
प्रोषधोपवास	• पर्व के दिनों में अवश्य उपवास करना
सचित्तविरत	• जीव सहित वस्तु के सेवन का त्याग
रात्रिभुक्तिविरत	• रात्रि भोजन का नौ कोटिपूर्वक त्याग

देशविरति के 11 भेद (11 प्रतिमा)

ब्रह्मचर्य	• सर्व प्रकार की स्त्रियों का त्याग (सदा काल शील पालन)
आरंभविरत	• पाप आरंभ का त्याग
परिग्रहविरत	• वस्त्र और पात्र को छोड़कर शेष दस प्रकार के बाह्य परिग्रह का त्याग
अनुमतिविरत	• पाप की अनुमोदना का त्याग
उद्दिष्टविरत	• अपने निमित्त से बने हुए आहारादि का त्याग

जीवा चोद्दसभेया, इंदियविसया तह्ट्ठवीसं तु।
जे तेसु णेव विरया, असंजदा ते मुणेदव्वा॥478॥

➔अर्थ - चौदह प्रकार के जीवसमास और अट्ठाईस प्रकार के इन्द्रियों के विषय इनसे जो विरक्त नहीं है, उनको असंयत कहते हैं ॥478॥

असंयमी

जो

विरत नहीं हैं

प्राणी असंयम — 14 प्रकार के जीवसमास की हिंसा से

इंद्रिय असंयम — 28 प्रकार के इंद्रिय विषयों से

वे असंयमी हैं ।

असंयमी जीव

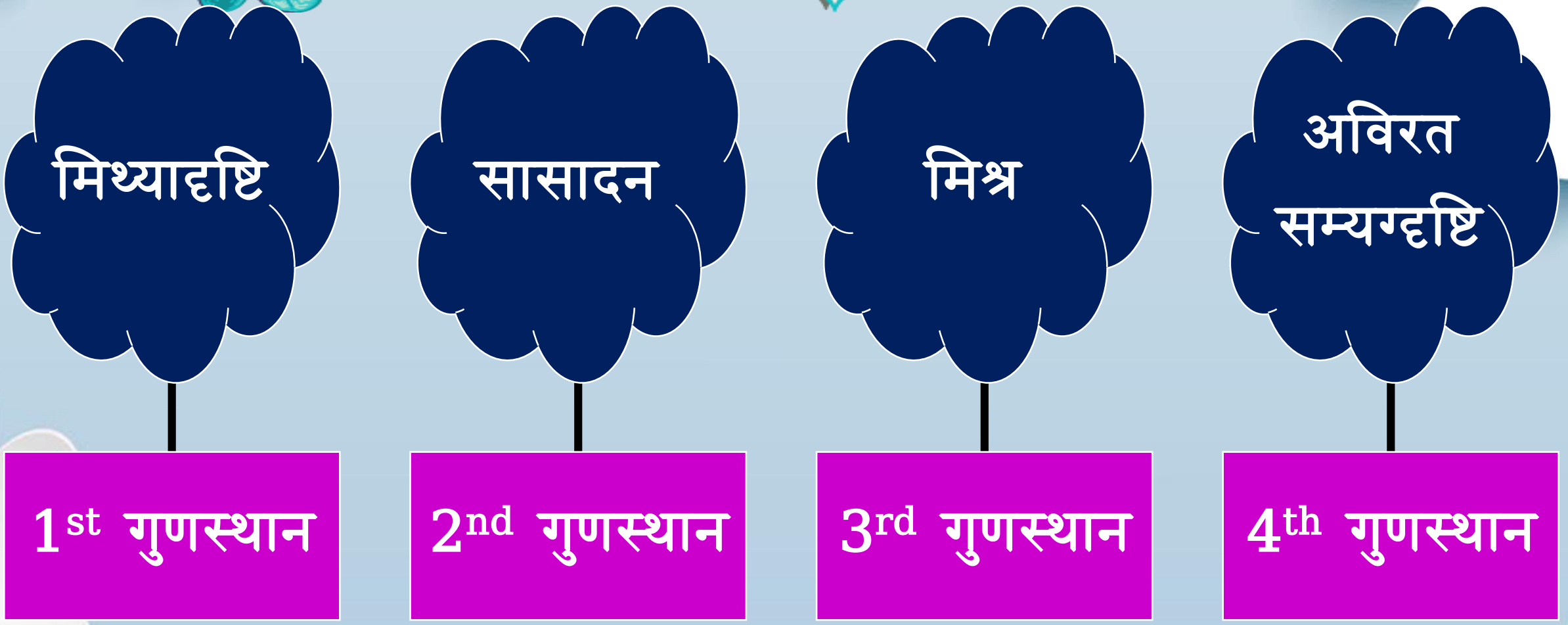
मिथ्यादृष्टि
सासादन
मिश्र
अविरत सम्यग्दृष्टि
1st गुणस्थान
2nd गुणस्थान
3rd गुणस्थान
4th गुणस्थान

पंचरसपंचवण्णा, दो गंधा अट्ठफाससत्ततसरा।
मणसहिदट्ठावीसा, इंदियविसया मुणेदव्वा॥479॥

➔अर्थ - पाँच रस, पाँच वर्ण, दो गंध, आठ स्पर्श, सात स्वर और एक मन इस तरह ये इन्द्रियों के अट्ठाईस विषय हैं ॥479॥

28 प्रकार के इंद्रिय विषय

स्पर्श (8)

कोमल-कठोर

भारी-हल्का

ठंडा-गर्म

रूखा-चिकना

28 प्रकार के इंद्रिय विषय

रस

- कड़वा
- तीखा
- कषायला
- खट्टा
- मीठा

गंध (2)

- सुगंध
- दुर्गंध

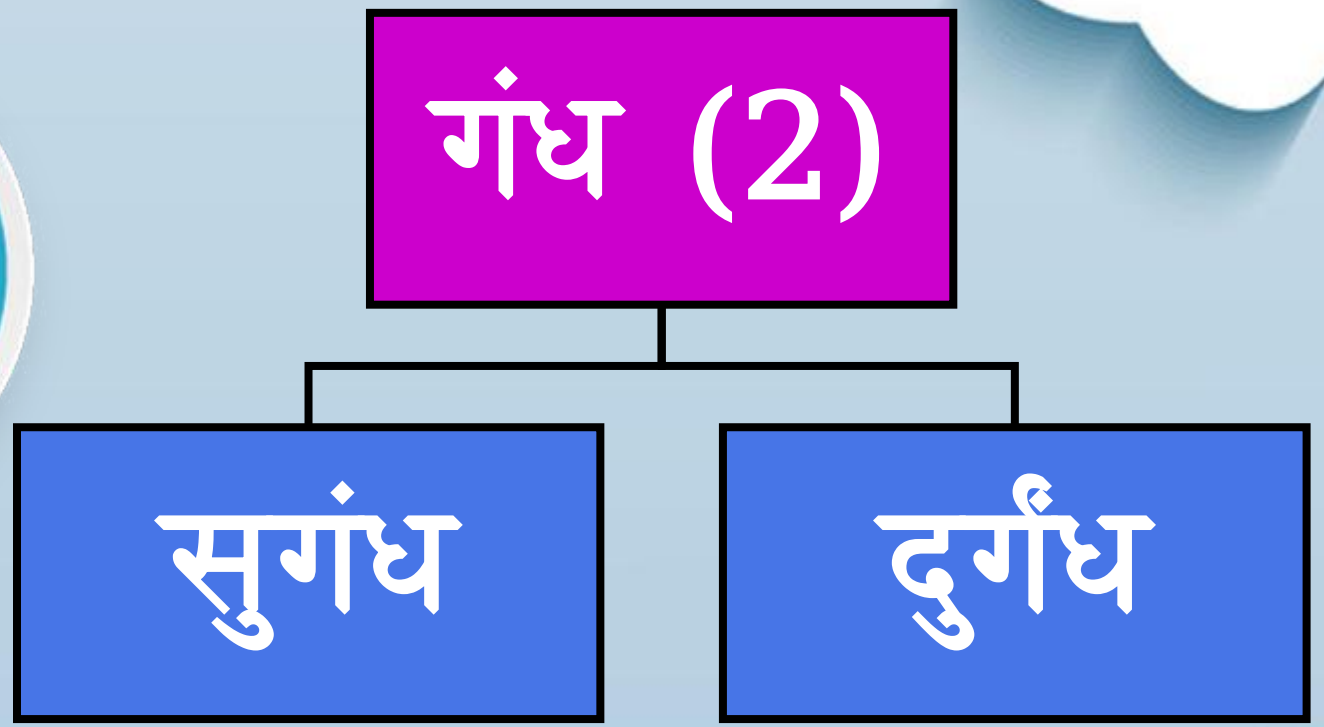

28 प्रकार के इंद्रिय विषय

सफेद

लाल

नीला

पीला

काला

28 प्रकार के इंद्रिय विषय

शब्द (7)

और मन

14 जीवसमास

क्र.	जीवसमास	
1	बादर एकेंद्रिय	पर्याप्त, अपर्याप्त 7 + 7 = 14
2	सूक्ष्म एकेंद्रिय	
3	द्वीन्द्रिय	
4	त्रीन्द्रिय	
5	चतुरिंद्रिय	
6	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	
7	संज्ञी पंचेन्द्रिय	

पमदादिचउण्हजुदी, सामयियदुगं कमेण सेसतियं।
सत्तसहस्सा णवसय, णवलक्खा तीहिं परिहीणा॥480॥

➔अर्थ - प्रमत्तादि चार गुणस्थानवर्ती जीवों का जितना प्रमाण (89099103) है उतने सामायिक संयमी और उतने ही छेदोपस्थापना संयमी होते हैं।

➔परिहारविशुद्धि संयमवाले तीन कम सात हजार (6997), सूक्ष्मसांपराय संयम वाले तीन कम नौ सौ (897), यथाख्यात संयम वाले तीन कम नौ लाख (899997) होते हैं॥480॥

संयमी – संख्या

सामायिक और छेदोपस्थापन संयमी

6वां गुणस्थान	• 5,93,98,206
7वां गुणस्थान	• 2,96,99,103
8वां गुणस्थान	• 897
9वां गुणस्थान	• 897
जोड़	• 8,90,99,103

संयमी – संख्या

परिहार-विशुद्धि		सूक्ष्म-सांपराय	
6-7वां गुणस्थान	6,997	10वां गुणस्थान	897

संयमी – संख्या

11वां गुणस्थान	• 299
12वां गुणस्थान	• 598
13वां गुणस्थान	• 8,98,502
14वां गुणस्थान	• 598
जोड़	• 8,99,997

पल्लासंखेज्जदिमं, विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं।
पुव्वुत्तरासिहीणा, संसारी अविरदाण पमा॥481॥

➔ अर्थ - पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण देशसंयम जीव हैं।

➔ इसप्रकार उक्त संयमियों और देशसंयमियों को मिलाकर छह राशियों को संसारी जीवराशि में से घटाने पर जो शेष रहे उतना असंयमियों का प्रमाण हैं ॥481॥

संयमासंयमी

$$\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$$

असंयमी

संसारी जीव – पूर्वोक्त सर्व राशि

= कुछ कम संसारी जीव

१३- (अनंत)

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889